हंस और कछुआ

मगाध देश में फुल्लोत्पल नामन एक तालाब था जीसमे दो हंस रहते थे। उनका नाम संकट और ~~कि~~ विकट था। उस तालाब मे एक कछुआ और बहुत सारी मछलियाँ भी रहती थी।

एक दिन कुछ मछुआरे उस तालाब के पासे से गुजर रहे थे। उनकी नजर उन मछलियों पर पडी और उन्हों ने यह तय किया की अगले दिन आकर वे इन मछलियों को पकड़कर ले जाएंगे। मछुआरों की बात हंसो ने सुन लि थी। और वह दोनो जाकर मछलियों और कछुए को यह बात बतादी। कछुआ यह सुनकर डर गया और बचाव के उपाये सोचने लगा। जल्द ही उसे एक उपाय सुजा। उसने हंसो से जाकर यह कहा की वह दोनो उसे वहा से ले जाए। हंसो ने एक लकडी लाकर कछुए को कहा की वह ~~उसे~~ अपने मुंह से लकडी के बीच से पकडे और वह दोनो लकडी के कीनारे पकड़कर उसे उड़ा ले जाएंगे। हंसो ने कछुए को चेतावनी दी थी की अगर वह अपना मुँह खोलेगा तो वह गिर जाएगा। फिर हंस उड चले। कुछ देर बाद वे एक गाँव से गुजरे। सारे लोग आसमान की तरफ देखने लगे। उडते कछुए को देखकर लोग अश्चार्य चकित रहगए। ~~लोगो ने~~ लोग कछुए के बारे मे उलटा सीधा

बोलने लगे। यह सुनकर ~~कछ~~ कछुए से रहा नहीं गया और वह अपना संयम खो बैठा और उन्हें जवाब देने के लिए अपना मुँह खोल दिया। लकड़ी उसके मुह से छुट गयी और वह नीचे धड़ाम से जमीन पर गीर पड़ा।

यह विशय से हमे यह सिख मिलती है की हमें हमेशा बोलने से पहले सोचना चाहिए और ज्यादा बात नहीं करना चाहिए।